DEPARTMENT OF ELEMENTARY EDUCATION
MIRANDA HOUSE

# विध्वंस संग अभिव्यंजना

Poetry theatrical performance with book launch

Performed by B.El.Ed. first year

# BOOK

# POEMS BY

# DEPARTMENT OF EDUCATION

# (B.EL.ED. THEATRE FIRST YEAR)

# प्रस्तावना

करोना के  इस दौर में, जब भय का आतंक, चारों तरफ फैला हुआ है, इंसान का इंसान के बीच के मानवीय संबंध को, बोध को, रिश्तों को सबको जकड़ कर नीयति ने अंधकार में धकेल दिया  है, तब अंदर का रास्ता स्वयं खुल जाता है वह बुद्धत्व का रास्ता होता है। कल्पना की नवशिक्षा का रास्ता खुलता है, नई राहें नए सपने मानवीय मूल्यों की जननी के नए-नए बीज, अंकुर, जन्म लेते है। अगर मनुष्य प्रकृति की इस भयावह आवाज़ को समझे तो अब अंतरयात्रा का सफ़र शुरू हो चुका है। अगर हम सृजनशीलता का आदर करें तो जितने मनुष्य उतनी ही रंगशीलता, विचारशीलता , कर्म शीलता,

कल्पना शीलता उत्पन्न होगी, बस उसे खुली  धूप और साफ शफ़्फ़ाफ़ हवा की जरूरत है। इनसे नए रास्ते खुलेंगे, शायद नए जंगल की विविधता फिर से जन्म लेगी। कविताओं की

ये पुस्तक बी एल एड 2020-21 के प्रथम वर्ष की छात्राओं का  सांझा प्रयास है, मैंने इन्हें व्यक्तिगत तौर पर सिर्फ इनकी स्वयं की जिंदगी के अनुभवो के इर्द-गिर्द के सवालों को उठाने और खुलकर लिखने के लिए उकसाया है, बाकी सारा कथ्य, भाषा, बिम्ब, प्रतीक, उद्देश्य, मिथ, शिल्प, शैली, कलात्मकता, इन्हीं छात्रों के अंतर्मन से फूटी है। इसे किसी निर्णय के रूप में ना परखा जाए बल्कि एक प्रोसेस के रूप में इसकी कद्र की जाए मैं यही आशा करता हूं और भविष्य में इन छात्राओं की रचनाशीलता के लिए भी यही ख्वाब देखता हूं । ये अंकुर  इनके अंदर के रचनाशीलता को एक संवेदनशील मनुष्य के रूप में

जीवित रखने में शिक्षा के क्षेत्र में जरुर योगदान देंगे। नई राहें नए सपने को बल देते हुए यही कहना चाहूंगा “चुप्पी की संस्कृति को तोड़ने के लिए यह कदम बढ़ते  चले जाएंगे”। सबको मेरा प्यार आभार और आशीष इन लेखों  और कविताओं को लिखने के लिए आने वाले कल के विकास के लिए महामारी के इस विध्वंस संग अभिव्यंजना के लिए बहुत-बहुत बधाई

-लोकेश जैन

**(Theatre faculty)**

**गुजर जाएगा यह वक्त भी**

माना कि थोड़ा कैद है,
माना दिमाग तंग है ,
महामारी भी छोटी नहीं,
हर आदमी बेरंग है ।
माना कि संगी साथियों से बंद मुलाकात है,
गुजर जाएगा यह वक्त भी,
बस कुछ दिनों की बात है।।

सड़के हैं लावारिस,
घर पर बैठा इंसान है,
मंदिर और मस्जिद है बंद,
बस खुले अस्पताल है।
धरती पर उतरा वह एक दूसरा भगवान है,
गुजर जाएगा यह वक्त भी,
बस कुछ दिनों की बात है।

अपने घर-वालों से दूर,
दूसरों के परिवारों के लिए,
उसने हर रात दिन एक किए,
दूसरों के स्वास्थ्य के लिए,
आज भी हर त्याग करने को तैयार है।
गुजर जाएगा यह वक्त भी
जब डॉक्टर हमारे साथ है।।

कोरोना ने विश्व पर जब किया प्रहार,
अस्पतालों में फिर लग गई कतार,
हो रही है ऑक्सीजन की कमी,
इस चक्कर में ना जाने कितनी जानें गई।
संसार में मचा यह कैसा भीषण हाहाकार है।
गुजर जाएगा यह समां भी,
बस कुछ वक्त की दरकार है।।

थम जाएगा यह भी कहर,
होगी दोबारा फिर सहर,
रख हिम्मत और सब्र तू,

थोड़ा समय तू और ठहर।
जीत कर रहेंगे ही, हम सब जो एक साथ है,
गुजर जाएगा यह वक्त भी
बस कुछ दिनों की बात है।।

मुंह पर मास्क, 2 गज दूरी,
और वैक्सीन हम लगाएंगे,
कोरोना का विश्व से,
हम वजूद तक मिटाएंगे।
तो क्या हुआ फ़िलहाल, जब खराब ये हालत है,
गुजर जाएगा ये वक्त भी,
बस कुछ दिनों की बात है।।
-Aanchal tiwari

“कैसी महामारी ये आई

त्राहि - त्राहि इसने मचाई,

शायद मनुष्य ने ये खुद है बनाई

इसीलिए ख़ुदा ने न की सुनवाई।।

When the world was under lockdown ,

Then the nature get its time.

Nature has power of creation and destruction ,

We forgot it also this time.

कब हमें समझ ये आएगा ,

कि प्रकृति से हमसे न उलझा जाएगा||

हे मनुष्य ! कर तू कुछ शर्म,

खुद न खोद अपनी कब्र ||

God lies in nature ,

In this destruction , you also have a share.

If you can’t become a creator ,

So do not become a destroyer .

प्रकृति को उसका समय तो मिला,

पर तू फिर उस राह है चला,

जो न कभी तेरी मंज़िल को जाती थी ,

और न कभी जाएगी,

अगर तू फिर उस राह चला तो तेरी मंज़िल ग़मगीन ही आएगी ||”

- Aishwarya tomar

“अब चुप-चाप शाम आती है,
पहले चिड़ियों का शोर होता था
दिन की शुरुआत करने का एक अलग ही जोश होता था।
गर्मी का  सुहाना सवेरा, सर्दी की कड़क दोपहर
बरसात कि रात की शील हवा व वसंत के महकते रंगीन
फूलों को महसूस कर
मन सुकून में क्या मदहोश होता था।
शायद आज भी धूप उतनी ही सुनहरी दमकती होगी
जितनी मेरी यादों में संग्रहित है
माफ़ करना, दावे के साथ नहीं कह सकती,
वो आज-कल प्रकृति से मेरा नाता ज़रा क्रम- रहित है।

आखिरी बार जब टिमटिमाते सितारे देखने के लिए आसमां
की ओर देखा था
तो ऊँची इमारतों की रोशन खिड़कियों ने दृष्टि का
अभिनंदन किया
मैनें भी वक़्त के साथ आया बदलाव समझ के इसे स्वीकार
लिया।
पर फिर मन में एक ख़याल आया
ये कैसा बदलाव, जो विकास की कोई लहर साथ ना लाया?
उन्नति का उद्देश्य था हमारा

पर मानव जात ने यह तो कुछ और ही कर डाला
चलो, मैं भी अब चलती हूँ, बाहर अँधेरा होगया है
शाम कब हुई पता ही नही चला
अब तो चुप-चाप आती है
पहले तो चिड़ियों का शोर होता था।“
-Aliya Fatima

“जाने कैसा यह दौर है
हर जगह खामोशी पर बहुत शोर है
टीवी पर केवल नकारात्मकता हर भोर है
मरना रोना बस यही हर और है
जाने क्या होगा
एग्जाम्स का कुछ पता नही
जीवन का भरोसा नही
क्लासेज ऑनलाइन है
और ज्ञान कुछ मिलता नही
मानसिक तनाव भरपूर है
जाने यह कैसा दौर है
घर में घुटन सी होने लगी है
अपनों से दूरी बदने लगी है
दोस्तो से मिले अरसा हो गया है
नेता जी रैली में लगे है
ऑक्सीजन और बेड खतम हो गया है
मुफ्त पानी सबको खूब भाया है
फिर जाने क्यों वैक्सीन से सबका दिल घबराया है
जहा खुद की कमी है

वाह वैक्सीन का एक्सपोर्ट है
समझ ही नही आता केसे यह दौर है
इन वीरों का महीनो से घर लापता है
बेटा सड़क पर मां का ऑक्सीजन सिलेंडर लिए खड़ा है
और वोह कुर्सी पर बैठा आत्मनिर्भरता का पाठ पड़ता है
उनका इंसानियत से नाता बहुत दूर है
हर इंसान लाचार और मजबूर है
भगवान ही जाने कैसा ये दौर है |
“

-Anjali khandelwal

“इस कोरोना काल में क्या नहीं देखा,
गंगा अशुद्ध देखी,
आसमान को काला देखा,
धरती को राख में घिरा देखा।

श्मशानों की कमी देखी,
परिजनों के अंतिम संस्कार न होते देखा।

लोगो को जीने की आस में दर दर भटकते देखा,
ज़िन्दगी की एक सास को तुलते देखा।

दुष्कर्मो की बढ़ती दरिन्दगी देखी ,
पीड़ित माँ बहन को अपमानित देखा।

परिवारों को नन्ही खुशियों खोते देखा,
बच्चो के जीवन का सार छुट्टे देखा।

कई अस्पतालों में बेड और दवाई की कमी देखी,
जाबाज़ कोरोना वारियर्स को ज़िंदगिया मुश्किल से बचाते देखा।

पीएम फण्ड में लोगो को मददत करते देखा,
'अच्छे दिन आएंगे' को झूठा साबित होते देखा।

वक्सीनेशन के लिए बोली लगते देखा,
सरकारों से विश्वास उठ्ते देखा।

लोगो को सबकुछ दाव पर लगाकर भी निराश देखा,
बहुतो को दुसरो का पेट भी भरते देखा।

मास्क को जरुरी पहनावा बनते देखा,
सैनिटाइजर को हथियार की तरह इस्तेमाल होते भी देखा।

दो गज की दुरी को जीवन का हिस्सा बनते देखा,
बर्तनो की आवाज़ को आशियानों के बहार गूंजते देखा।

किसी को क्या पता था की यह दिन आते,
आशाये थी की यह वक़्त भी अच्छे होते।
इस कोरोना काल में क्या नहीं देखा,
इस कोरोना काल में क्या नहीं देखा।
"

-Anjali saini

“

History will remember when the world stopped.
And the cars parked in the street.
All busses still.
And the trains didn’t run.

History will remember when the schools closed.
And the children stayed indoors.
The medical staff walked towards the fire
And they didn’t run.

History will remember when the people
Lighten up the candles
Sang in their balconies,in isolation
But so very much together.

History will remember when the people fought
For their old and their weak.
Protected the vulnerable.

History will remember when the virus left
And the houses opened
And the people came out
And hugged
And started again.
“

-Anjali yadav

“ प्रकृति और महामारी

मनुष्य को शिक्षा इस कदर है प्यारी;
कि भूल गया वो प्रकृति।
बिन प्रकृति खोखली रही शिक्षा,
प्रकृति बिन ज़िंदगी अधूरी।
कौन कहता शिक्षा ही सब कुछ ,
जिससे न मिली, उसका कुदरत ही सब कुछ।
मनुष्य मान बैठा शिक्षा को खुदा,
और हो गया प्रकृति से जुदा ‘ ।
याद आई उसे अपनी तरक्की
पर भूल बैठा उस की देन प्रकृति

जिंदगी की इस दौड़ में पा लिया उसने सब,
पर पीछे छोड़ गया प्रकृति का दिया सब ।
महामारी के इस दौर में काम ना आई दवा
काम आई तो बस प्रकृति की वो हवा।
प्रकृति ने दिखाई सौन्दर्य, जो कहीं खो सी गई थी,
जिससे देखने की कीमत मासूमों की जान थी।
न आएगी लौट के वो दोबारा,
आएंगी तो बस उनकी सुखद यादें।

कौन सी है वह रस्सी ?
जिसमें मनुष्य की जान है बसती।
आखिर कब तक मनुष्य भागेगा प्रकृति के योगदान से
भागा तो वो कुदरत की शतरंज के मैदान से।
ऐ मनुष्य! ना कर तू घमंड अपने इस तरक्की पर ,
मौत के बाद तुझे समाना है इसी प्रकृति पर।
“

- Aparna topno

“पृथ्वी पर भगवान का रूप -  डॉक्टर
कहते थे डॉक्टर भगवान का रूप होते हैं
यह बात किसी ने सच है बतलाई
शूरवीर है वो जो कर रहे हैं लड़ाई
लगाकर अपनी जान की बाज़ी
यह है वह लोगों को अपने घरों में रहने के लिए राजी
भूलकर अपनी सेहत का हाल
लोगों का जीवन वह रहे हैं संभाल
होकर भी बुरे हाल में
 कर रहे हैं मदद सभी मरीजों की इस करोना काल में
रह सके हम सब का परिवार खुश
इसलिए हैं वह अपने परिवार से दूर
 क्या करें वह भी
है अपने कर्तव्य और इंसानियत के हाथों मजबूर
ना गर्भवती ना विकलांग डॉक्टर पीछे हटा भूल अपनी दशा
भारत के सभी डॉक्टर बिखेर रहे हैं एक अभिन्न छटा
घर क्या होता है यह उनको पता नहीं
परंतु ‘मिशन करोना मुक्त भारत’ उनका कभी रुका नहीं
महीनों से नहीं गए यह डॉक्टर अपने घर
इन्हें अपने परिवार की भी है बहुत फ़िक्र

पर मरीजों को ठीक कर उन्हें भेज रहे हैं उनके घर
लाशों से कभी-कभी घिरे रहते हैं
अपने परिवार को भी यह परेशान देखते हैं
पर खुद एक अटूट चट्टान से बने रहते हैं
शायद भगवान इन्हें ही तो कहते हैं
हिम्मत न हारी इन्होंने
संघर्ष रोज करते हैं
अपनों के लिए यह डरते हैं
कमजोर दिमागी हालातों में यह नहीं रुकते हैं पर यह डॉक्टर है जनाब
यह हार कहां मानते हैं”
-Chhavi jain

“शिक्षा पर कोई रोक नहीं

सब पढ़े सब बढ़े
शिक्षा है सबका अधिकार||

शिक्षा है तो कल है
शिक्षा है तो बल है||

जब से कोरोना आया
सरकार ने शिक्षा संस्थाओं पर ताला लगाया||

पर शिक्षा को कोई रोक ना पाया
ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा को फैलाया||

वाट्सएप, जीमीट पर होने लगी कक्षाएं
कक्षाएं ऑनलाइन, गृहकार्य ऑनलाइन
सब कुछ हो गया ऑनलाइन||

स्मार्टफोन इंटरनेट बन गए आज की ज़रूरत
जिसके पास ये ना हो उसकी कैसे पूरी हो ज़रूरत ?||

फोन नहीं पर टी. वी तो है
घर घर ना होकर भी हर एक के पास है||

एक नहीं अनेक लोग एक साथ इसे देख सकते हैं
एक टी. वी से अनेक बच्चे शिक्षा ले सकते हैं||

स्वयं प्रभा हो या हो दूरदर्शन
इन पर आते ऐसे कार्यक्रम है
जो देते ज्ञान है ||

ना कोई इंटरनेट ना कोई फोन
एक टी. वी से बच्चे पढ़ते
गणित, अंग्रेजी, हिन्दी, विज्ञान और भूगोल||

टी. वी ही नहीं रेडियो ने भी शिक्षा को पहुँचाया
शिक्षा की तरफ हाथ है बढ़ाया ||

पढ़ाई में रुचि बनाए रखने के लिए
यह सुनाते कहानी और लाते प्रश्नोत्तरी भी है ||

बच्चों में शासन बनाए रखने के लिए
ये लेते है कक्षा सुबह -सुबह||

छोटा हो या बड़ा हो
सब शिक्षा ले सकते हैं ||

बिना फोन के भी शिक्षा पहुँचाई  जा सकती है
हर बच्चे को उसका अधिकार दे सकती है||

टी. वी और रेडियो के माध्यम से
हम पूरा कर सकते है सपना
सुंदर, उज्जवल, शिक्षित
भारत देश हो अपना||

-Divya bansal

“

यही शोर चारों ओर हैं
नेता हो या अभिनेता, विद्यर्थि हो या शिक्षक, पाठक हो या लेखक, वैज्ञानिक हो या चिंतक।
चारों ओर तुम्हारा जोर है,
हो तुम लोकतंत्र का चौथा स्तंभ,
यही शोर चारों ओर हैं।

तुम्हारी कहानी बड़ी पुरानी है,
सालों से तुमने करी सबकी निगरानी है,
करोड़ों की आबादी में भी तुमने  पल-पल की खबरें पहचानी है।

सरकार और जनता के तुम सेतु हो,
चाहे अवस्था कैसी भी हो तुम सबसे पहले पहुंचे हो,
तेज धूप, बारिश ,बाढ़ ,तुफान आंधी ,हर जगह से तुमने खबरें पहुंचाई है।

जिस तरह सिक्के के दो पहलू हैं,
उसी तरह तुम्हारे भी दो चेहरे हैं,

सच्चाई में थोड़ा झूठ का मिश्रण है,
इसीलिए  मीडिया अच्छाई बुराइ कितनों का संगम है।

बात करते हैं आज की ये  लड़ाई तो पुरानी है,
फिर यह एक दौर भी आया,
कोरोना ने कोहराम मचाया,
तुमने अपने माध्यम से इस महामारी की जानकारी को पल-पल जनता तक पहुंचाया।

लोगों के दर्द को तुम्हारे माध्यम से,
संत्री मंत्री तक पहुंचाया,
परंतु इलेक्शन में तुम्हारा ध्यान कुछ ज्यादा भटकाया,
उस भीड़ को तुमने कोरोना क्यों नहीं बताया,
एग्जिट पोल का महत्व लोगों की जान से कुछ ज्यादा पाया,
इसीलिए तुमने इलेक्शन को कोरॉना से ज्यादा फैलाया।

पर फिर भी हम तुम्हारे शुक्रगुजार हैं, तुम्हारे अच्छे कामों के कर्जदार हैं,
इसीलिए अपने देश के मीडिया को हम सब का सलाम है।
“

-Divya bisht

“कविता का शीर्षक - डिजिटल पढ़ाई
पढाई किताबो के पन्नो से न जाने कब कंप्यूटर की स्क्रीन पर
आ गयी पता ही नहीं चला
एक दौर था जब कंधो पर बैग और बैग
मे  किताबे थी
अब एक दौर है जब बैग में लैपटॉप और माउस
पहले कलम और कागज़ की बेमिसाल जोड़ी थी और अब कीबोर्ड
और उंगलिओ का जादू चलता
पहले किताबे खुलती थी और अब लैपटॉप ओं होता है पहले
किताबो की खुशबू थी और अब लैपटॉप की रौशनी
पहले क्लास मे बच्चे शोर मचाते थे और अब म्यूट पर रह कर
व्हाट्सप्प ग्रुप पर गप्पे लड़ते है
खेलते थे फ़ोन पर गेम्स अब करते है उस पर पढाई
उफ्फ्फ्फ़ कोरोना वायरस तुमने कैसी माहमारी फैलाई
कानो में है ईअरफोन्स आँखों में लग गया चस्मा टीचर लैपटॉप
के अंदर , ओंलाइन क्लासेज का है ये करिश्मा
पीडीऍफ़ मई है किताबे, कॉलेज स्कुल हो गए ऑप , ग्रुप
मीटिंग्स हो गयी क्लासेज अजब गज़ब ये खेल
अब तो टीचर्स की बाते सीधा कानों मे आती है
नेटवर्क जाये बिच मे तो अटेंडेंस पीछे से डराती है

बगल न कोई दोस्त है न बेंच है वो पुराने क्लासरूम, प्लेग्राउंड, लंचबॉक्स हो गया किस्सा कोई सुहाना
ऍम आई ऑडिबल स्टूडेंट्स?
इस माय वौइस् ब्रेकिंग?
इस देयर अनि इश्यूज यू अरे फेसिंग?
और इस तरह के कुछ नए शब्द लाया 2020
म्यूट और उन्मयुट का सीक्रेट गेम्स ऑनलाइन क्लास क साथ आया
वी-फि इंटरनेट का खर्चा थोड़ा बढ़ाया
लेट कर पढ़े या बैठ कर ये है अब हमारी मर्ज़ी क्या करे ये है आलस की खुदगर्ज़ी
ऑनलाइन क्लासेज जैसे भूत बनकर पीछे पड़ा है
उफ़ कोरोना विरुस् तुमने कैसी महामारी फैलाई!”
-Eshika pal

“ज़ंजीरों से बंधे है सब,
ख़बर नहीं न जाने क्या हो जाए कब।

बिखर चुके है सारे सपने,
मिल नही पा रहे है कोई अपने।

चुनाव के समय दिख रहे थे जो चेहरे,
ना जाने कहा जा के है वो आज ठहरे।

कोई पूछे ज़रा जा के उस गरीब से × 2
कि किसने दिया है उसे न्याय,
ख़ामोश खड़ा है वो
और हो रहा है बस अन्याय।

रो रहा है उस बेटे का दिल,
जिसके बीमार पिता को बिस्तर नही पा रहा है मिल।

काश इस चुनौती के लिए वो तयार रहते,
काश आज इतने आसूं ना बहते,
काश हम इस “”काश”” से मुक्त हो जाएं,
काश हम साथ में फिर से गाएं - मुस्कुराएं।

ना जाने कब यें जंजीरें खुले,
ना जाने कब हम उन अपनो से गले मिले।

उम्मीद नहीं छोड़ी है अब भी,
क्या पता कब हो जाए कुछ भी।

दिखेगी वो आशा की किरण,
होगा फिर से हम सबका मिलन।

चाहे वो साथ दे ना दे,
मिलकर करेंगे पार हम ये मुश्किल सरहदे।।

-Garima

“जब हवा से सासें चुराना हो गया मुश्किल तभी कार्यवाही होनी चाहिए थी।
जब लाशों को जलाने की जगह ना बची तभी कार्यवाही होनी चाहिये थी ।
पर  कार्यवाही कर्ता कौन गुनहगार तो कहीं और ही थे ,
वह व्यस्त थे उन रैलियों में  उन्हें लगा वो उन वोटो की गिनती से जीत जाएंगे पर जीता तो कोई और ही जिसने ना जाने कितनों को मार दिया ,
मार  दिया उन मासूम चेहरों को जिन्होंने ज़िंदगी जीने के ख्वाब बुन रखे थे।
कुम्भ में चंद पल मिलने की  खुशी देकर बिछड़वा  दिया उस सत्ता के लालच में ।
आए थे जो मुट्ठी बंद करके
चले गए हाथ पसारे
अच्छे दिन आएंगे, अच्छे दिन आएंगे कहकर सोचा ना था एक दिन अपने ही अपना साथ छोड़ जाएंगे
हे इश्वर,  करवाई तो तभी होनी चाहिए थी।“

- Harshita

“शीर्षक: विश्वास रखो

ये जो आया है कोरोना
सब कहते हैं इससे डरो ना
लड जायेंगे इससे,
यह विश्वास रखो ना

पर महामारी के आलम में,
डर लगता है सबको
परिवार को जिसने खोया है,
पूछो जाकर उसको

कैसा लगता है जब,
व्यक्ति के आने कि उम्मीद हो
पर फिर एक पल में ही,
वह उम्मीद भी विलीन हो

ऐसे लोगों को जाता देख कर ,
विश्वास टूट जाता है
पर इस मीडिया को तो बस ,
यही सब दिखाना है

बैड की कमी ,ऑक्सीजन की कमी से,
कितने मासूम मरे हैं
उम्मीद तोड़ता है यह सब,
बताओ कितने मासूम बचे हैं

महामारी के इस दौर में भी,
टी.आर.पी. का अभी भी बोलबाला है
इलेक्शन आए नहीं की ,
के भूल जाना कोरोना भी एक माया है

“”नेशन वांट्स टु नो”” कहकर,
बातें बकवास करते हैं
नेशन की जो हालत है
उसको नजरअंदाज करते हैं

इन सब से परे भी कुछ,
जाबाज रिपोर्टर भी थे
अपनी और अपने परिवार से,
पहले काम को रखते थे

कोरोना उन्हें भी हुआ,
दुनिया को समझाते हुए
चले गए वो भी,
अपना कर्तव्य निभाते हुए

सोशल मीडिया का दौर है,
काम आया है ये भी
लोगों ने मांगी मदद,
तो आए आगे अनजाने भी

जागरूक किया है लोगों को,
इस कोरोना की महामारी से
बताये तरीके बचने के
अपने-अपने सलीके से

महामारी के आने पर ,
सीखा बहुत कुछ लोगों ने
हर कोई आगे आया है
औरों की मदद करने

परिस्थितियां सुधरेंगे ,

यही विश्वास रखो
और क्या कह सकते हैं,
यही कि उम्मीद रखो ।

-हिमानी (2020/886)

“

HAVOC !

Deafening silence !!
It was something new, that nobody has viewed.

A sound emerged, a light struck...
Sometimes, I get amused by the capability of people getting stuck in the foolish views of well, you know who...

There was only one rule, actually two
दो गज दूरी और मास्क है जरूरी !
Some listened, some did not, but it did reciprocate through all.

Nothing is the same as before, what is left is just a swollen soul

Graveyard is full of corpse, people have lost their hopes
Harsh reality has hit us again, don’t know who’ll win in this brutal game,
Lives are at stake, maybe they have made a big mistake

Brutality is all what I saw, and I cannot infer who’s really at flaw
There’s no judge to give the verdict, all we have to do is predict

But some things happened that were good of all, nature finally found its long lost soul
Alas ! It didn’t last for long, maybe together we can correct what’s wrong

People are helping each other as their own, we are much closer than before.

Hahh!! That saying is literal afterall

That united we stand and divided we fall.

छोटी-छोटी खुशियों में मुस्कुराना सीख लिया हमने,
इतनी मुश्किलों में भी जीना सीख लिया हमने ।
“

-Himanshi siddharth

“It was all going well, until the human broke the law of nature.
To satisfy his greeds, he started troubling creators.
Brutuallt chasing their feather, tooth, skin and claws, slowly human started showing up his flaws.
Cutting up trees for wood food and fodder recklessly, he harmed our mother earth endlessly.
Broken bottles and charred pieces of glass ,
Dumps of garbage turned out of grass ,
Deforestation of forest and cutting of trees,
This is environment that surrounds me.

Poisonous pesticide spray on our food ,
Oceans filled with thick oil crude, pushing aquatic life to a slow doom,
And that’s all what human consume.
All the toxic air that industries exhale,
Is whats that left for us to inhale,
Discharge of industrial effluents into rivers in large size,
Has caused so much Havoc to aquatic life .

But since the covid has arrived,
Humans have been suffering all their deeds,
As they are locked in home all alone,
Nature is getting one more chance to bloom.
Meanwhile humans have stooped disturbing ,
Sparrows have again started chirping,
Slowly but surely lockdown is medicine tonature,

Giving new life to  birds all creature,
Hope, human will realise their mistake soon ,
And mother earth will again bloom.”
-Himanshi

“

*ऑनलाइन क्लास*

सुबह आँख खुलती है एक मैसेज के साथ ,
जो कहता है जॉइन द क्लास !
सारे बच्चे परेशान है जिससे ,
वो है हमारी ऑनलाइन क्लास।
आधी नींद के साथ हम बच्चे पढ़ते हैं क्लास में,
टीचर्स भी पढ़ाते हैं पूरे होसो आवाज में।
क्लास को जॉइन करके हम तो चले जाते हैं ,
टीचर अपना पढ़ाता है और हम सारे ग्रुप में बतियाते हैं।
इस it क्लियर स्टूडेंट्स ?
सुनकर सभी yes माम् तो कह जाते हैं,
लेकिन अगर कोई क्वेश्चन पूछा जाए तो सभी म्यूट हो जाते हैं।
इंस्टाग्राम , फेसबुक , व्हाट्सएप्प सारे इसी वक्त चलते हैं ,
पढ़ना तो है ही नही क्योंकि पेपर में तो गूगल बाबा बताते हैं।
इस ऑनलाइन क्लास में हम बच्चे वो खिलाड़ी होते हैं,
जो मौत को भी टक से छूकर वापस आ जाते हैं।

जिसमे टीचर सोचते रह जाते है,
की कैसे इस जंग में हम जीत जाते हैं।
कुछ भी कहो ऑनलाइन क्लास होती तो बड़ी मज़ेदार है,
अलग ही इसके किस्से होते हैं अलग ही किरदार है।

*कायनात*
इतना डरे हुए हैं कोरोना के डर से सब,
लगने लगे हैं किसी उजड़े शहर से सब।
थोड़ी-सी अपनी तबीयत नासाज़ क्या हुई,
मुझे देखने लगे हैं शक की नज़र से सब।
कल तक थे आसमान पे उड़ते रहने के आदी,
पर आज बंधे पड़े हैं किसी बूढ़े शजर से सब।
खुद को सबसे बेहतर समझने का ये गुरूर,
एक दिन मारे जाएंगे इस ही जहर से सब।
कल तक तो कर रहे थे बरसों के वायदे,
मगर आज लग रहे हैं बड़े मुख्तसर से सब।
सभी गर इस कायनात को अपना समझते,
होते नहीं फिर इस तरह दर-ब-दर से सब।

-Indul

“ना जाने कहाँ गए वो खुशी के पल,
देखे थे जो हँसते-मुस्कुराते चेहरे कल|

जहान कल तक सुनाई देते थे हंसी के ठहाके,
जहान गोलू मोलु फोड़ा करते थे पटाके,
जहान ईद पर बंट्ती थी सेवइयां,
वहां बह रहा  आज आंसुओ का दरिया |

जिस ज़मीन पर हुआ करती थी मेले की धूम,
उसी जगह रो रहे हैं आज चेहरे मासूम,
जिस जगह सुनाई देती थी बच्चों की खिलकारी,
उसी जगह सुनाई दे रही हैं आज बिस्तरों के लिए मारा-मारी |

कभी सोचा ना था की जिंदगी का ऐसा आयेगा मोड़,
रह जाएंगे अपने भी पिछे छोड़,
एक तर्फ है महामारी की तलवार,
और दूसरी तर्फ गरीबी दे रही है मार|

पूछे जा रही है अंतर आत्मा एक सवाल,

कब वापिस आएंगे फिर वही साल

शाम ये गम भी सही
भोर आशा की आएगी,
जिंदगी वापीस से अपने वही रंग दीखायगी|

पायेंगे हम मंजिल को भी,
मिल्कर अब ये शपथ लेते हैं,
किसी भी चुनौती का हम डटकर ,
सामना कर लेते हैं|

-Ishita gupta

“शीर्षक - नए ज़माने की बात

बात है - बात है, यह नए ज़माने की यह बात है,
कोरोना की कहानी है और हमारी आँखों में पानी है |
मोबाइल से पढ़ - पढ़ कर थक गए हम,
ना मन लगता है इन चार दीवारी के बीच,
यारों से मिलने को भी तरस गए हम |
ना तो घर में शान्ति है, ना ही वक़्त का है ठिकाना
साथ भी बैठ नहीं पाते, ना खा पाते संग खाना |

पढ़ाई का तो पूछो ही मत, बिल्कुल मन नहीं लगता है,
स्कूल - कॉलेज जाने को मिले यह तो बस अपना सा लगता है |
पिछले एक साल से ना ही देखा है कॉलेज, ना ही देखा है स्कूल,
ऐसा लगता है मानो जैसे सब गए हैं भूल |
जैसे तैसे पढ़ तो लेते हैं, पर अब लिखने में ज़ोर आता है,
टाइपिंग बहुत अच्छी हो गई है, पर एग्जाम्स में उससे काम
नहीं चल पाता है,
भले ही एक्सपीरियंस कुछ मिला नहीं, जान बची हुई है तो कोई
गिला नहीं,

जीत तो हम जाएंगे, कभी ना कभी तो अच्छे दिन आएंगे।

आने जाने का खर्चा नहीं, खाने - पीने पर चर्चा नहीं,
घर में घेरे हुए है यह ऑनलाइन पढ़ाई, शायद होगी इसमें भी कुछ भलाई |
कमर दर्द - चश्मे के नंबर बढ़ते ही जा रहे हैं, बचपन में ही अब तो बुढ़ापे के दिन नजर आ रहे हैं,
ना ही अब स्कूल के मैदानों में खेल होते हैं, ना ही बजती स्कूल की घंटी, धीरे-धीरे खत्म हो गई स्कूल की सारी मस्ती।

किताबें हाथ लगी नहीं, उनकी खुशबू याद आती है,
पन्नों की वह स्याही अब फीकी सी नजर आती है |
ना ही रहे कोई शौक, ना ही रही कोई रुचि,
वक्त मिले तो बस सो जाते हैं, जिंदगी हो गई है बिल्कुल रूखी |

बाहर पढ़ने जाने वाले बच्चों के लिए है यह अच्छी बात, बिता रहे हैं कुछ और पल अपने परिवार के साथ |
अच्छा भी लगता है कि शिक्षा का कोई दायरा नहीं, पढ़ने के लिए कोई कायदा नहीं |

कहीं से भी, कभी भी किया जा सकता है इसे प्राप्त, फिर क्यों कुछ लोग कर देते हैं उटपटांग सी बात ?!

अजी, यह अजीबोगरीब बयान तो सुनिए - कोई बताए गोबर - गोमूत्र को इस महामारी का इलाज, तो कोई बोले 5G नेटवर्क ने गिराई है कोरोना नाम की गाज़ , लोग अफवाहों की चादर ओढ़ रहे हैं और मोबाइल टावर तोड़ रहे हैं |
किसी को लगता है करोना में भी बस्ती है जान, जीने का उसे हक दो और गवा दो अपने प्राण |
ज्ञानी तो बड़े ही बन बैठे हैं , पर हैं वास्तव में अनजान।

ठेकेदार बने बैठे हैं पहरेदार, शिक्षा का लगा रखा है जिन्होंने व्यापार, आखिर हक है शिक्षा सबका, जीवन का है श्रृंगार ।
विद्या को व्यापार ना समझो, विद्या तो है वरदान,
उत्तम श्रेष्ठ सब मिथ्या है, अपने उत्कर्ष तक पहुंचे सिर्फ विद्वान।

रुका हुआ है बच्चों का भविष्य, पता नहीं होंगे या नहीं एग्जाम, ऐसी परिस्थिति में गलत है करना इस तरह की डिमांड |
प्रकृति लाई है यह तबाही, सुधर जाने में ही है भलाई |

करुणा को बसाना है मन में , फिर इस महामारी से जीत जाना है सब ने |
प्रकृति सिखाती कितना कुछ, हर लेती है सबका दुख |

बात है - बात है, यह नए ज़माने की बात है,
प्रकृति ही जननी है, प्रकृति ही है पालनहार,
प्रकृति को अगर पहुंची हानि तो यह जीवन है अभिशाप।“
-Ishita vohra

“through the window I watch the empty ground
I wonder till when can I not meet my friends
But sadly our hands are bound.

All we can do is sit and wait listening to the birds and squirrels make sound
I wish soon our prayers are answered and peace is found

The days when it was normal to meet, party and play.
Hoping we win this battle and stop turning ourselves into clay.

I pray  this black cloud  hovereing over our heads flys away soon
Lets wait and turn this unfortunate bane into a boon.

Till when will I not meet my other family?
The ones who have stayed with me in all my ends
My real family is with me but it is incomplete without my friends.”
-Jasmine rana

“

I think it was an year ago
We were sipping our afternoon’s tea
Tossing through some channels
And a news of pandemic struck me

A lockdown was declared
Some said maybe it’s in the air
But we knew at a glance
Together as a family we could live in trance

Because a family always comes together
Tied with bonds of love forever
In this sickness or in health
In poverty or with wealth
In death or in life
In happiness or in strife

Together we went through
Like the sailors of a crew
From rounds of Ludo to Dalgona coffee
And scary stories to calling Charlie

But not many have returned from their quarantine
Those 14 days are actually 14 years of an exile
So many have lost their closest
Who fought bravely with congestion in the chest

I hope the day of relief comes sooner

Not only for the relief from the virus
But also wrenching pain of losses

We have to stick together as one big family
For every mother who lost her son
Or a son who lost his mother
We can never replace them but
Surely spread the kindness further.

- Jyoti saxena

“ ऑनलाइन शिक्षा के फायदे व नुकसान

किसी को मिले उपकरण तो कोई हुआ परेशान,
किसी छात्र को मिला परिवार का साथ तो कोई हुआ सैतान,
बाहरी खर्च बचे तो अतिरिक्त खर्च से छूटी जान,
ऑनलाइन शिक्षा से हुए कुछ फायदे व नुकसान।
कोई हुआ मानसिक रोग से ग्रसित तो किसी ने शुरू किया योगासन,
बाह्य खेल और कार्य हुए कम तो कम हुए शारीरिक थकान,
छात्रों के लिखावट के रुचि में कमी आई तो किताब की लत हुई कम,
ऑनलाइन शिक्षा से हुए कुछ फायदे व नुकसान।

कहीं छात्र और परिवार के बीच बढ़ा प्यार तो कहीं शुरू हुई अनबन,
किसी के आंखों का हुआ हाल तो किसी का पढ़ाई से ऊबा मन,
किसी का टूटे सपने तो कोई हुआ तो किसी क। अनुशासन हुआ कम,
ऑनलाइन शिक्षा से हुए कुछ फायदे व नुकसान।
-Khushboo kumari

“When I asked, have you seen god?
They replied no!
But I said I have!
They live amongst us wearing white apron and PEP.
They have homes, yes! But currently, hospital is their residence.
You must have known by now who am I talking about!
Yes! THE HEALTHCARE WORKERS!

कहा जाता है डॉक्टर को भगवान का दूसरा दर्जा दिया जाता है पर मैं नहीं मानती, दरअसल पहला दर्जा है उनका।
माना भगवान ने जिंदगी दी पर अपना जीवन परे कर दूसरों की साँसें जो बढ़ाता है वो है हेल्थ केयर वर्कर है वो।
This time too shall pass we hear everywhere but the reason would be my god, the HEALTHCARE WORKERS.
The healthcare sector did the job !
The nurses, staff,doctors, assistances,or be it the person with the mop!

Neither the politicians, nor the so called stars all who did the job was my star, THE HEALTHCARE WORKERS.

हर  एक नकारात्मकता है,  म्रत्यु और डर अचानक आ टपका है।
पर अचंभा तो ये है,  कोई इलेक्शन के लिए फ्री पानी तो कोई आत्मनिर्भरता की बात करता है।
इंसानियत जेसे मर गई है पेसा जेसे सब कुछ है।
जहाँ जरूरत में एक और फ्री टिफिन तो दूसरी और  ब्लैक की oxygen है

Children are sitting in homes with the hope of going back to school soon.
Parents are with the hope of getting back their jobs soon.
Aspirants are waiting for exams to be conducted.
Students are full of uncertainty wether semester exams would be suspended.

ऑनलाइन शिक्षा में ज्ञान कहीं खोया है

वो बच्चे को मोबाइल दिलाने के लिए हर और रोया है ।
जाने क्या होगा पर खुशी हुई मानव की एक जुटता को देख कर अच्छा लगा influencers को oxygen लीड्स बना देख कर।

It was a bliss to see environment bloom.
And I wish by heart the earth will gloom.
But remember who was there when life was uncertain it was none other than the god, THE HEALTHCARE WORKERS”
-Khushi sharma

“Every little situation has two sides
This merciless corona is such a plight

Polluted waters are coming back to life
Number of animals are reaching new heights
But the ailment has become so unforgiving
That rivers of blood and death are brimming

So many peaple locked in their own homes
A process very tedious to set in stone
Though roads are covered with dying and dead
There are still some pictures worth giving a glance

No more crowds ,no more cars
No more buses to stand in path
No more traffic no more travels
The situation get tangles the more we unravel
In all this chaos the pandemic has caused
Still trees are being chopped and animals poached
We need to protect and start help restoring nature

Because some people didn’t learn and are still being immature

People say nature has its own way of healing
That might be true as such the facts are appealing
I know our views of normality and peacefulness has shattered
But the outbreak also told us what really matters

So just breath a little and don’t let all this make you overwhelm
Focus on the bright side and all will be well.

-Khushi tiwari

“नमस्कार हमारे प्रिय श्रोताओं मैं  किरन।
कहते हैं चीजों को अपनी ही आंखों से देखा जाए तो उनका कारण और उनकी जड़ तक पहुंचना आसान हो जाता है। तो ऐसी ही एक कविता मेरे द्वारा लिखी गई है जो मैं आप सबको सुनाना चाहूंगी।

देखा है मैंने

अमीरों को लॉकडाउन में परिवार के साथ हंसते खेलते देखा है मैंने देखा है,
देखा है मैंने उन्हें दुआ करते हुए कि उनका परिवार हमेशा साथ और खुश रहे,
 पुरानी व्यस्त जिंदगी से निकलकर परिवार के साथ रहने की चाह देखी है मैंने।

गरीबों को मजबूरन पैदल चलते देखा है मैंने,
बाप की मुख पर परिवार के खर्च की चिंता देखी है मैंने,
 और देखी है मैंने भूखे पेट की चाह कि कल की रोशनी मिटाएगी उनकी भूख, आएगा कोई नहीं जो करेगा उनकी मदद।

परिवार में दादा-दादी की देख-रेख अच्छे से होतु देखे देखी है मैंने,
और देखा है मैंने कई बच्चों के सिर से मां बाप का साया उठते हुए उन्हें अनाथ होते हुए,
देखा है मैंने लोगों को दुआ करते हुए कि पहले जैसा था वैसा हो जाए।

पंछियों के परिवार खुले आसमान में उड़ते देखे देखा है मैंने।
चिड़िया को अपने बच्चों को खाना खिलाते देखा है मैंने,
और देखी है मैंने उनकी खुशी की वह मनुष्य की कैद से आजाद है,
सूखे पेड़ों को बारिश के पानी से उगते देखा है मैंने, और देखा है मैंने प्रकृति को दोबारा हंसते और बढ़ते हुए।

तो क्यो मनुष्य यह नहीं समझता कि परिवार का साथ रहना,
अपने आसपास की चीजों का ख्याल रखना है जरूरी, चाहे वो प्रकृति हो या हो कोई जानवर या इंसान।
सब कुछ जानते हुए भी मनुष्य को हाथ पर हाथ रखे बैठे देखा है,
हाँ मैंने देखा है, हाँ मैंने देखा है मैंने।“
-Kiran

“आज के मीडिया

वक्त की बदहालाती से गुजर रहे हैं
यूं हाथ थामें उम्मीद करते हैं फिर एक दिन सवर जायेंगे।
सब अगर अपनी काम ईमानदारी से करें
तो हम जरूर तर जाएंगे।
हर पेशा के लोग सिर्फ पेशेवर मूल्य को ध्येय में रखें तो हम जरूर निखर जाएंगे।
लेकिन दुख तो तब होता है, जब इसके विपरीत नजारे नजर आ जाते हैं।

उन तमाम कर्मियों को धन्यवाद जो हमें हर दिन जीवन जीने में सहायक है, और किसी न किसी तरीके से हमारी मदद पहुंचाते हैं।
इसी सिलसिले को आगे ले जाते हुए आज के पेशेवर मीडिया पर प्रकाश डालना बहुत अहम हो जाता है, हा मेरा सलीका थोड़ा अलग होगा।

हां अब भी कुछ इमानदारी पत्रकारिता के क्षेत्र में बची है और वह बिल्कुल ही प्रशंसा के अधिकारी हैं।

लेकिन उन मेंस्ट्रीम मीडिया को भी नहीं झूठलाया जा सकता जो हमारे बीच पल रहे मक्कारी हैं।
आज इस क्राइसिस के वक्त पर जितना प्रभाव ये मीडिया वाले ला सकते थे शायद ही कोई संस्था मुहैया करा पाती।
मीडिया की अथाह संभावित शक्ति जो इस वक्त सकारात्मक माहौल बना सकती थी,
लोगों को कोविड के प्रति सचेत कर सकती थी,
बिल्कुल उल्टी दिशा में बह रही है।
जो आवाम की आवाज को सरकार तक ले जाती
खुद सरकार की भाषा में बोल रही है।

आओ आओ सुनाएं उस मुल्क की हाल
जो है विश्व की सबसे बड़ी लोकतंत्र
और जहां का चौथा स्तंभ हो गया है चाटुकार और लाचार।

वेआवाज को आवाज देने का वायदा करने वाले
खुद मूलभूत मुद्दे पर बात करने पे मुखवाधिर हो जाते हैं।
जनहित की बात करने वाले चिंता सरकारहित की करने लगते हैं।
तब देश की भविष्य धूमिल हो जाता है,
जब मीडिया के पेशेवर मूल्य बदल जाता है।

बुनियाद जिसकी प्रेस की स्वतंत्रता को सुदृढ़ कर राष्ट्रहित पर टिकी है,
अब वो सरकार हित की बात कर रही हैं।
अक्सर तो पक्ष प्रत्यक्ष रूप से लेते दिख जाते हैं
और अगर ना ले पाए तो निष्पक्षता की चादर तले अस्पष्ट विचार परोस जाते हैं। यानी कि अब ये मीडिया वाले नेताओं की काम की जिम्मा उठाते भी अब दिख जाते हैं।

जो खुद को मध्यवर्गीय व राष्ट्र हित के बारे में सोचने का दावा करते हैं
वो भी कुछ महत्वपूर्ण खबरों को अखबार के पिछले पन्नों पर सरका देते हैं।

मीडिया का काम तो वाकई बढ़ रहा है
क्योंकि विपक्ष व आवाम की आवाज बुलंद करने से ज्यादा
मेहनत तो आवाज दबाने में लग रहा है
और वह मीडिया सतत कर रही है।
काम तो मीडिया वालों की बढ़ रही है
क्योंकि बेचारे स्वतंत्र रूप से सरकार की भाषा बोल नहीं पाते;
उन्हें राष्ट्रहित का सहारा लेना पड़ता है,

और मुश्किल तो तब और भी बढ़ जाती है
जब उन्हें देश भक्ति की आड़  में मुंह छुपाना पड़ता है।

अब ये तो वही बताएंगे कि पर्दे के पीछे क्या चल रहा है?
यह बोलना चाहते हैं या उन्हें रोक दिया जाता है?
जब ये देश हमारी इतनी बड़ी बदहालाती से गुजर रहा है,
जब जीवन छिन्न-भिन्न हो रहा है,
मां से बेटा, पति से पत्नी, मां बाप से बच्चे दूर हो रहे हैं हर रिश्ता टूट रहा है।
तब इन्हें जनता के सवाल का जवाब नहीं आता
या जानबूझकर चुप्पी ठान ले रहे हैं
या अपनी स्वतंत्रता स्वेच्छा से समर्पण कर रहे हैं?

-Kumari pooja

“Liking this, looking that,
People following what you do,
Photos being looked at.
Facebook, pinterest, Instagram are all the same,
Posting about your life or what you like,
They just all have a different name.
Keeping in touch with people
You see in real life,
To connecting people who are like each other,
Social media serves a good purpose.
Talk to friends, we don’t have to call,
Just leave a comment, that’s all.
Gone are the days where no pretending
Of a glamour life, no twitter actor,
We didn’t care about our appeance,
Just to satisfy others,
You were what you felt like, no gratified covers.
We have given our life to this net,
A slave to phone and computer set, we can’t live half an hour without checking a text.
Back in those days my friends and I would say hello to passersby,
How did we get the news you ask?
With newspaper it wasn’t a difficult task.
We would listen to songs, chit chat and play together.,
Tv was a lovely friend,
But now it’s an old tale,
Everyone has Facebook, whatsapp and email,
So busy are we in using these apps,

We even sometimes miss our naps!
Oh! I wish leaving our phone just once and look at out town,
So much beauty is there to see,
The sky, trees, rivers and even bees.!
“

-Laiba

“#था एक परिवार , जहा माँ बाप को वक्त नहीं था बच्चो के साथ गुज़ारने को,
मजबूर हो गया कोरोना काल में एक एक दूसरे से बंधने को,
काम की भगा दौड़ी में न सुन्न पते थे एक दूसरे के मैं की,
न दे पते थे वक्त अपना एक दूजे को, बस लालसा रहती धन की,
करीब ले आया उन्हें भी कोरोना..जिन्हे अपनों की एहमियत न थी ,
दूर भी कर गया कुछो को, जिनकी दुनिया चलती ही अपनों से थी.

#था एक परिवार , जो खता था खाना हर रोज साथ बैठकर ,
मजबूर हो गया कोरोना काल में , रोने को बिछड़कर ,
एक माँ थी जो हर रोज करती थी इंतज़ार खाना बनाकर,
बेटा आता था देर रात कुछ पैसे कमाकर,
छीन गया कोरोना के चलते उस माँ का इंतज़ार ,
जिस दिन गया उसका बेटा कोरोना से हार ,
सेह न सकी बेबसी इकलौते बेटे को खोने की,
दम तोड़ गयी जब और हिम्मत न बची रोने की.

#था एक परिवार जहाँ खेलते कूदते थे बच्चे सुबह शाम ,
मजबूर हो गए कोरोना काल में , छिना बचपन , ऑनलाइन कर पड़ रहे सारे काम ,
ज़िन्दगी में आयी कई कठिनाई , कुछ के नहीं रहे पिता, कुछ के दम तोड़ गए बड़े भाई ,
मजबूर हो गए कोरोना के चलते बचपन भूलने को,
साडी ज़िम्मेदारियां जो उनके सर आयीं ,
छिन गयी नन्ही खुशियां , जन्म लेने से पहले ,
खामोश से हो गए न जाने कितने मासूम चेहरे .”
-Latika

टॉपिक: (ऑनलाइन एजुकेशन- एक नया खिलौना )
सबने देखा और जाना भी है कि,
ऑनलाइन एजुकेशन मार्किट में नया खिलौना आया है.
किसका इन्वेंशन? किसका नतीजा ?
कोरोना!! कोरोना और कोरोना का नतीजा!!
बच्चे, अध्यापक और सब जुटें है इस नए खिलोने को समझने में निकालने में कि क्या होता है ,
स्क्रीन शेयर, पिन और गूगल क्लासरूम जैसी नयी टेक्नोलॉजी
जो कराते है, ऑनलाइन एजुकेशन बच्चों और अध्यापको की !!
बच्चे लगे हुए हैं पूरे दिन मोबाइल में,
लग गया है उन्हें मोटा-मोटा चश्मा और कमर और सर का तो जैसे
बज गया है बैंड बाजा बारात !!
पर दूसरी तरफ इससे हो रही है,
समय और पैसे की बचत , कही भी , कैसे भी , कोई भी ले पा रहा है किताबो का ज्ञान !!
न सुबह जल्दी उठने की टेंशन न सुबह- सुबह बस पकड़ने की दोर्र आराम से घर पर बेठकर लो किताबो से एजुकेशन !!
हो तो रहा इससे यह फायदा पर डिसिप्लिन की तो बज गयी है बैंड !! बैंड !! बैंड !!
बच्चो का तो जैसे स्केडूल हो गया है पूरा गोल -गोल , गोल- गोल जैसे हो कोई एक गोलमाल !!
न पढ़ने पर ध्यान देते न फैमिली को टाइम देते बस लगे हुए
डिजिटल नोट्स को पढ़ने और समझने में !!
बस आखिर में मेरे साथ सब येही प्राथना करो कि कोरोना तू चला जाये और बच्चों का एजुकेशन वापिस पटरी पर आजायें आजायें !!
-Lavanya

“
हमने कहाँ प्रकृति को बचाया...

हम तो ठीक थे हवा चली क़हर ढाया।
पता चला कोरोना तो आधुनिकता की दौड़ से आया।
हमने कहाँ प्रकृति की बचाया?
हमने तो बनाये रहने के लिए आलीशान बंगले ,
उस गाँव में रहते तो असभ्य कहलाते ।
बंगला तो आलीशान बनाया, घर में पेड़ लगाने का जगह कहाँ बचाया?
गाड़ी खड़ी करने की गैराज़ तो ज़रूर बनवाया।
वृक्ष लगाना है ये याद कहाँ आया?
हमने कहाँ प्रकृति को बचाया ?
पूर्वज पता नहीं क्यों प्रकृति प्रेमी थे ?
घर, खेत खलियान में पेड़ लगाते, मार्ग जाते तो भी वृक्षरोप आते ।।

हमने तो हाइवे ,हवाई अड्डा ख़ूब बनाये,
यहां तक रेलवे के पटरियों को दिन रात एक करके जाल बिछाया।।

पेड़ो को काटकर, वनों का विनाश कर,
और कह दिया तुमसे अब हम सफर जल्दी कर लेते हैं~ दादा जी ।।

तुम थे तो क्या था? बैलगाड़ी से जाते
समय बहुत लगाते।
हमने आज रेलगाडी से, बस और मोटरकार, हवाई जहाज से यात्रा कर अपना कितना समय बचाया।।
हमने कहां प्रकृति को बचाया।

कोरोना क्या है?मनुष्य के विनाश का संदेश वाहक जो कह रहा है सावधान!
यदि तूने प्रकृति को नहीं बचाया, इसलिए हमने ये कहर ढहाया।“
-Mahima

“Covid – a journey

The life was good and it never slowed down,
Until everything stopped when covid hit the town.
We used To sit in cafes and roamed around.
Now we can’t even listen the traffic’s sound

I remember  when my family had covid,
I was scared and numb, when I saw my crying mum.
We were never this hopeless before,
And Now we can’t even predict the future anymore.
On the one side,
There is scarcity of foods
And another filled with burning woods….

I saw people losing their family members
But this time lost lives was just adding numbers…

When I see people rushing to hospital
I brake down a little….

I swear, This feeling is so bad and the thing is
I can’t even hug my dad….

Trust me don’t loose hope,
Soon everyone will cone out of this sorrow,
We will see the new moon tomorrow….

We should not lose the hope
We will soon see the crowded roads….”
-Manya

“””नहीं, मत छोड़ना मुझे””

नहीं, मत छोड़ना मुझे
वहाँ अकेला
जहाँ हमलावर का चुनाव होता हो
और सहायक पर हमला
जहाँ बीमारी से जंग धुंधली हो जाए
और लोग मुझसे ही जंग पर उतर आए

नहीं, मत छोड़ना मुझे
उन लोगों के पास जो
ऊपर वाले की मर्ज़ी को
समझते है मेरा अपराध
जो मुझे ही बैरी मानते है
कैसे मांगू मैं उनका साथ

क्यों?
क्योंकि सहम गयी हूँ मैं
डर गयी हूँ, मेरी रूह काँपती हैं
कैसे बताऊँ मैं आपको
रोज़ मेरे सर पर
मौत नाचती है

शायद दोष मेरा था
जो ऑक्सिजन कम पड़ गया
शायद दोष मेरा था
जो हॉस्पिटल का बेड ना मिल पाया
शायद दोष मेरा था
जो इंसानियत को धर्म माना
शायद  दोष मेरा था
जो ऐसी परिस्थिति में सीना ताना

पर कोई गम नहीं, परिवार को छोड़ने का
कोई गम नहीं, कभी ना सोने का
आपकी सुरक्षा के लिए हम हैं
जान पर खेल कर कोरोना से लड़ेंगे
पर अपनी सुरक्षा की बली
कब तक देते रहेंगे

मगर मुझे वहाँ अकेले
जाना ही होगा
अपना वादा
निभाना ही होगा
इस बार सहयोग करोगे ना?
ताकी मिट्टी में मिल जाए ये कोरोना
नहीं, मत छोड़ना मुझे
समझ रहे हो ना?

-Marisha

“Surrounded by screens all way
Still we sit alone at our place
No face to look at but
‘Facebook ‘ have got all the pace
We live in a virtual world
Defined by comment section
And bonds to our loved ones
All went down the wrong direction
Sure we need media
We need to keep up with all
We need to win the race
At once from one and all
But a minute or two with friends
A cup coffee with your love
Won’t make you regret
Taking time from virtual bluff
We know all this is our creation
We know all this is our plan
But we cant loose this war
Between media and man

-Megha

“

दिल में अगर यकीन हो तो
नकामी नहीं मिलती,
यूँ ही किसी को
मंजिल नहीं मिलती |

जो लोग वक्त के साथ
इरादा बदल देते हैं,
चाह कर भी उन्हें कभी
महफ़िल नहीं मिलती |

मुसकिलो को देखकर,
कुछ लोग घबरा जाते हैं |
पर यूँ ही तो अंधेरे में घुमने से,
रोशनी नहीं मिलती |

अंधेरा घना है ये माना चलो हमने,
पर कट जाएगा ये भी साथ चलने से |
क्योंकि रूक कर बैठने वालो को,
कभी मंजिल नहीं मिलती |

निकलो अगर घर से,
तो यकीन को साथ लेकर
रास्ते में उसे ढूँढने की
क्योंकि फुरसत नहीं मिलती |

“

-Mitushi

“Pace of change is accelerating,
Social media is becoming more fascinating.

Covid came in 2019, world is fighting.

Familiars and friends are away,
But media is on the way.

Dark days has led to increased anxiety and depression,
But through social media celebrities are spreading positivity and motivation
From ‘sab shi ho jayega’
To ‘life gives you banana’ .

Twitter, Instagram, whatsapp are the last hope of miracle for oxygen,
And we can’t ignore the things happened with the citizens.

Reporters are reporting all the day
No matter how much they have to pay ( in the sense of life)

Hours spending on TV
There was nothing good to see.

Though these dark days are long
But we have to stay strong.”
-Nancy

“हम तो घरों में बैठे रहे।

कोरोना महामारी की हुई शुरुआता

हम तो घरों में बैठे रहे।

गरीब मजदूर बेसहारा लोग चले अपने वतन ।

चल पड़े खाली हाथ और नंगे पांव ।

और हम तो घरों में बैठे रहे।

नन्ही बिटिया बिठा अपने पिता को पीछे साइकिल पर हजारों मील चल पड़ी अपनी मंजिल करने पार ।

कौन जाने उनका हाल, क्या खाया क्या पिया रोते बिलखते बच्चों का भूख से हुआ बुरा हाल ।

और हम तो घरों में बेठे रहे।

रोते बिलखते भूखे प्यासे बच्चों ने दम तोड़ दिया राह में,

और हम तो घरों में बैठे रहे।

अपनी मंजिल पर चलते चलते राह में थक कर रेल की पटरियों पर किया आराम ।

राह की थकान में इतना भी न था होश,

छुकछुक करती रेल कब कुचल कर चली जाये

किसी को कुछ न था होश ।

पटरी पर सो रहे लोगों में से कोई भी न बचा ।

सैंकड़ो बच्चे हुए अनाथ,

सैंकड़ों महिलायें हुई विधवा ।

अनेकों माँ ने खो दिया अपने घर का एकलौता चिराग।

और हम तो घरों में बैठे रहे ।

कुछ दिन बीते फरिश्ता बन मीडिया ने जनता तक पहुँचाई,

गरीब बेसहारा राहगीरों की पल पल की आवाज़ ।

और हम तो घरों में बैठे रहे।

आज भी छलक पड़ते है आँख से आँसू ये सोचकर.

कि एक बाप बेटे की लाश को कंधे से लगाकर चला जा रहा मंजिल की ओर ।

अपनी पत्नी को झूठा दिलासा देकर कि हमारा बच्चा है बिल्कु ठीक ।

ताकि माँ ये सदमा सहन न कर सके और कहीं वो भी जिंदगी के इस सफ़र छोड़ न दे मेरा साथ ।

दिन बीते रात गुज़री घर बैठे मिली राहगीरों की भूख, प्यास और मरने की ख़बर ।

जब जाना राहगीरों का इतना बुरा हाल, छलक पड़े आँख से आँसू झटपट घर से निकले ।

भर झोले और गाडीयों में बिस्किट, कैले और बाकि सामान ।

जिसने भी देखा राह चलते राहगीरों का हाल

झटपट सबने किया उनकी भूख प्यास और घर तक पहुँचाने का भरपूर इंतजाम।

अगले दिन जैसे ही मोबाइल ऊठाया ।

लग गई दुखद समाचारों की झड़िया ।
एक महिला ने  अपने बच्चे को दिया बीच रास्ते में  कुछ ऐसे जन्म ।

खुला था आसमां और खुली थी ज़मी ।

हाथ में लिए बच्चे को बढ़ाती रही मंजिल की ओर कदम ।

होता अगर खुदा ज़मीं पर पूछती उस खुदा से,

क्या थी उस मासूम की गलती जिसने लिया जन्म खुली ज़मीं और खुले आसमां पर ।

और न जी सका वो कुछ दिनों आपनी बहादुर माँ के संग ।

होता अगर खुदा ज़मीं पर पूछती उस खुदा से,

दो गज ज़मी न दे सका नदियों, और तालाबों में तैरती बेबस और लाचार लाशों को ।

न मिल सके मरने के बाद अपनों से ।

न दे सकें कंधा अपनी माँ और अपने पिता को ।

संजोय थे आँख में कितने अरमान एक पिता ने

संजोय थे रात दिन कितने अरमान एक माँ ने ।

कंधा तक न दे सका पिता अपने लाल को ।

न जाने आगे और क्या देखना होगा इस जंमीन और असमान को ।

न जाने आगे और क्या देखना होगा इस जंमीन और असमान को ।
“

-Nasreen anjum

“मीडिया की सच्चाई

सुबह का समय था सोचा थोड़ा समाचार देखूँ,
बिगडे हालत में अच्छे से विचार देखूँ,

पर ऐसा ना चल रहा मीडिया के बाज़ार में,
सच को दबाके बन रहें सब झूठे इस देश में,

झूठी बातो पे ये मिलके चिल्लाएंगे,
कोई तो बताओ इनको इससे सच्चे थोड़ि बन जाएंगे।

आई नई महामारी,
हुए हैं कितने बीमार और कितने ही मर गए,
बिमार है मेरा देश, पर मीडिया की है कामाई, चार जन को बुलाके करेंगे अब ये लड़ाई।

छाई है बिमारी बढ़ रही बेरोज़गारी,
पर कभी न दिखाएंगे ये समस्या हमारी

बेरोज़गारी में कौन भूखा सोया इनको कुछ फ़र्क नहीं,
सेलेब्रिटी ने क्या खाया बस यहीं न्यूज है जारी।

सबको पता है आज कैसे हालात है,
कहीं न कहीं अपना भी हाथ है।

फेक को फॉलो करना छोड़ो, फैक्ट पे ध्यान दो। इस बीमारी से लडने में घर रह कर देश का भी साथ दो।“

-Nikita bara

Parents are like friends they say as we grow up.
We got this opportunity and they showed up.
They can discuss your assignment
and can give you a review or two.
As during the pandemic it's only them and you.
They can fold your pastel sheets and give it a shape of bird.
As it is the deadline next day for art and craft
but you preferred reading all day being an absolute nerd.
They bring you coffee to the table
when you are making your numerous presentation.
They can give you pat or hug
when you didn't score well in one of them.
Pandemic made you people best of buddies
from the starting to it's end.
Don't forget this friend of yours even
when the lock down ends.

-Pratishtha

अब और ना हो पाए

हर साल होता था इंतज़ार
गर्मियों की छुटियो का
पर अब ये कर रही है बोर
मचा नहीं पा रहे खुल के शोर ,

घर से बाहर कहीं ना जाये पाए
सखा- सहेली की याद बड़ा सताए
नानी का घर अब हमे बुलाये
शॉपिंग गोलगप्पो के लिए मन ललचाए
बर्थडे दिवाली सब फीका-फीका पड़ जाए,
अब और न हो पाए

एक साल होने को आये
कॉलेज अभी तक देखा नहीं
अब मे मे जाने को जी चाहे
ओ कोरोना तू बता अब हम बच्चे कैसे अपना दिल बेहलाये
अब और न हो पाए |

-Preeti

“To the stars that shine far away I asked,
How you glitter?
What does it takes to shine? How much strength do you posses?
What’s the reason your light is so genuine?
To answer which the star reverts
“”Just some day this all will end.
What will be left is divine.
Just the supreme almighty.
For he created us to be destroyed.
So why not give what all you have?
Why not be the source of happiness for all?
Why not be a muse for someone in a lone night?
All it takes for me to shine like this is being myself
And accepting myself with all my flickering flaws.””
I ask you human a simple question which is,
“”can’t we all just be the way we are,
with content in our heart moving to our end,
doing our task of spreading happiness?

-Radhika

“मैं प्रकृति हूँ बोल रही हूँ
बराबरी का खेल.. खेल रही हूँ
तुमसे पहले मैं थी यहाँ आई
भार तुम सबका मैं झेल रही हूँ
कौन जाति हो तुम सब सुनलो
सही क्रमशः अब माला बुनलो
रायता फ़ेलाया है तो अब हिसाब तो लुंगी
पहले स्वस्थ तो होलूँ फिर माफ़ करूँगी
समय अबधी में तुम सीमित हो
मैं हूँ, थी, और यहीं रहूँगी।

देख तेरी करनी कैसे माथे पड़ी है....
कुछ दिनों पहले तक...तू पड़ा था...
ओ मानव....प्रकृति आज तेरे पीछे पड़ी है...
वक्त ने क्या शिकस्त दी है मनुष्यों को इसकी नाज़ो-अंदाज तो देखो ....
स्वयं अपने मुताबिक चल रहा पर इन्हें स्वयं से बहुत पीछे छोड़ दिया है.....”

-Rajni

“Peer,not the fruit,but the dears,
Those who help overcome all fears
Missing my people I write this down
Who””ll encourage now To Wear The Crown

बातें मत करो, यहाँ तुम पढ़ने आते हो
क्या बतायें मैडम इन बातों से ही तो स्कूल याद आते हैं
Teachers sushh to stop chit chat
Wish they knew our maths combat
You want us to learn all countries
We play ATLAS, please,no worries

जिंदगी में कुछ दोस्तों का होना बहुत ज़रूरी है
पर ये किसने के दिया की वो दोस्त इंसान के रूप में ही हों

Let me take the liberty
Call my cooksie mah little friend
Kind and adorable she is
For her my babbling will neverend

Learners,students,freshers
We have gone through the phases
Some beautiful memories
Bearing along casualties

Today if I look back
What I learnt from teachers was influential
No doubt they were commendable
I might go too far
I owe my peers the knowledge
I have today
I owe my people my view of the world
गुज़र जायेगा, गुज़र जायेगा मुश्कील बहुत है मगर वक्त ही तो है गुज़र जायेगा, गुज़र जायेगा जिंदा रहने का ये जो जज्बा है फिर उभर आयेगा गुज़र जायेगा, गुज़र जायेगा

The scars will go away
The memories won’t
Let’s rebuilt the friendship we miss
Don’t even tell you don’t

Nothing left for pandemic to struck
Lemme meet my friends you take 10 bucks
If not now, we’ll still have hope
We’ll meet soon,just held to rope”
-Ramandeep

“आओ सुनाओ एक कहानी
जो प्रकृति ने आपबीती बयानी

जब जंगल कट रहे थे और धरती रही थी धधक
तब भी अनजान बना रहा ये इंसान, देखकर जानवरों को दर-दर भटक

नदियां सूख रही थी, बर्फ रही थी पिघल
पर्दा ये नज़रों पर फिर भी रखा, प्रदूषित हवा जब रहे थे निगल

अब क्रोध ने सीमा थी लाँघि, बांध सहनशीलता का तोड़ा
प्रकृति को बेबस समझते थे जो आईना उनकी तरफ मोड़ा

महामारी ने लाचारी का घूंठ था चखाया
फूल समझ बोये थे जो कांटे, जख्म उनका अब गहराया

एक और जंगल सजीव हो उठे, नदिया ताल- तलैया इठला रही थी सारी
दूसरी और वही चरण सीमा छू रही थी बेरोज़गारी

बेरोज़गारी के इस संघर्ष में क्या मनुष्य फिर से नादान बनेगा
खेत खलियानो पर बोझ डालकर, शिकार करने निकलेगा

फिर दोबारा क्या प्रकृति पर होगा अत्याचार
भरे भी ना थे जो जख्म, उनपर  होंगे और भी वार

अभी दास्ताँ  है ये अधूरी
आप के हाथों में है,कैसे करोगे इसे पूरी”
-Rishika

“रूठी रूठी हुई थी ये धरती !

मानव से परेशान थी ये प्रकृति!

इंसान समझने लगा था खुद भगवान !

आ हुई प्रकट ऐसी मुसीबत जिसका न मिला किसी को समाधान !

जैसा काला हुआ था आसमान !

वैसे ही काल टूट पड़ा आज तुझ पर इंसान !

हैवान था न तू !

ना देखि तूने अपने अलावा किसी की मुस्कान !

जब बंद हुआ तू कुदरत की केहर की वजह से घरो में !

तो देखा था कैसे खिल उठा था आसमान !

जिस प्रकृति की गोद

में खेल कर तू पला बढ़ा !

सदियों से उसकी ही की तूने तबाही !

अब डरते हो कोरोना से !

तब नहीं था डर जब गलतिया दोहराई !
देख जो धरती उगल देती थी तेरे लिए दाना पानी !
वही निगल रही तेरी मैली मिटटी कर तबाही !
जगह भी नहीं बची इंसान को जला या दफ़नाने की !
जो जो बोया था व्ही ऊगा जा रहा हैं !
कुछ हैं मासूम जिनको भी खोया जा रहा हैं !
मुश्किल से सम्भला था ये मंज़र !
लेकिन अब दूसरी लहर में फिर बर्बाद हुए जा रहा हैं !
दोष भी अब किस किस को दे !
बिना रेहम करे अब ये जितनी साँसे बच्ची हैं !
उन्हें भी निगले जा रहा हैं “
-Ritu

“वो दिन भी क्या दिन थे।

बहुत याद आते हैं वह दिन,
जब मां जल्दी उठाया करती थी सुबह,
और भाग पढ़ते थे हम पकड़ने स्कूल की बस,
बचनी टीचर की डांट से दौरे पड़ते थे कक्षा में, वह दिन भी क्या दिन थे।

बहुत याद आते हैं वह दिन
जब एक टिफिन में चार चार दोस्तों के हाथ होते थे,
दोस्तों के साथ खाना खाकर खेलना ,
और हर पीरियड में टीचर को परेशान कर कक्षा के बाहर खड़े होना ,
वह दिन भी क्या दिन थे।

बहुत याद आते हैं वह दिन,
जब भाग कर जाते थे हम खेलने ,
कंप्यूटर के पीरियड में दोस्तों के साथ लैब जाने को हम तरसते ,
भागे भागे जाते दोस्तों के साथ बैठने के लिए, वह दिन भी क्या दिन थे।

मगर इस कोरोनावायरस ने तो सब खत्म ही कर दिया,
ना अब मिल पाते हम उन दोस्तों से,
नहीं खेल पाते उनके साथ ,
पढ़ाई में भी ना रहा वह आनंद जो पहले हुआ करता था ,
बहुत याद आते हैं वो स्कूल के दिन ,
जाने कब वापस आएंगे वह दिन।“
-Riya goel

“TOPIC - SOCIAL CELEBRATIONS

वाह रे करना!

By – RIYANSHI GAMBHIR (2020/1689)

वाह रे करोना बहुत कुछ दिखा गया तू,
बहुत कुछ सिखा गया तू।

Diwali, holi, eid, rakhi, भाईदूज
सब कुछ online ही बनाया बहुत खूब।

दिखा दिया दम technical progress का,
घर के अंदर ही सारे त्यौहार बने,
वो जन्मदिन की video calling ,
सारे festivals ऑनलाइन ही बने।

ना हिन्दू ,ना मुस्लिम,ना सिख, ना ईसाई,
सब भूलकर बने त्योहार
घर बैठे-बैठे ही हो गए तैयार।
फोटो खिंचवाकर, घर की बनाई मिठाइयां खाकर बने त्यौहार।

याद है मुझे वो college का पहला दिन,
सूरज भी उस दिन कर रहा था shine,
लेकिन हम नहीं थे fine,

क्योंकि पहला दिन ही था online,
Freshers भी online,
सब का प्यार भी मिला online।

यहाँ तक कि,
शादी में भी पहुंचे through मोबाइल
सज धज कर, कर रहे थे smile,
रसगुल्ले ,गुलाब-जामुन सब खाया,
घर बैठे ही हमने शादी पर bhangra पाया।

वाह रे करो ना बिना दिखे, सब कुछ दिखा गया टु।
सहनशक्ति सदाचार, मानवता का धर्म, दया, हिम्मत और साहस
यह सब सीखा गया तू।
धन्यवाद!
“

-Riyanshi gambhir

“अपनों के रंग
कैसा रहा दिन?
पूछने की भी जिन्हें फुर्सत ना थी आज वही सब का हाल-चाल मालूम कर रहे हैं
तुम करते क्या हो पूरा दिन? यह बात भी जान रहे हैं
बच्चों के जीवन शैली से अनजान थे जो आज उनकी बातों पर भी गौर फरमा रहे हैं
परिवार ही सबसे जरूरी है!
यह सुना तो बहुत था लेकिन असली मतलब अब समझ में आ रहा है
हर इंसान अपनी जीवन की अहमियत लगा पा रहा है
जो खुशियां वेकेशन में ढूंढ रहे थे अब पता चला
वह साथ में लूडो खेलने में भी है
घर में कौन रोया कौन हंसा भी नहीं पता था अब वही हर घर अनेक कहानियां बन रहा है
कभी खुशी कभी गम यह जो बातें हैं वह जीने का मन भी कर रहा है लेकिन अब जाना यही है कि आज ना संभले तो शायद फिर अपना भी कोई कल नहीं
इसलिए शुक्रिया लॉकडाउन अंधेरे की बेरंग जिंदगी में फिर से अपनों के रंग भरने के लिए”
-Ruchika

“जन्म लिया तो बचपन से खाली माँ की गोद रास आई,

जैसे ही बडे हुए ना जाने कैसे ये दूरी आई।

पर जब Lockdown का समय आया,

तो स्थिति परिस्थिति मुस्कुराई और अपनों के करीब लाया।

है माना थोड़े झगड़े भी हुए,

क्योंकि हर किसी के विचार कहा एक जैसे होते है?

कभी हँसी कभी उदासी,

पर सब होते है एक दूसरे के साथी।

मुसीबत आए किसी एक पर तो,

सहारा बनता पूरा परिवार है।

ये रिश्ता नहीं पल भर का,

ये तो जन्मों का साथ है।

हम भागते रहे, माया के लिए हर जगह

सुख जो परिवार में है, वो मिलेगा कहाँ।

जिसके पास नहीं होता है

खुशी से भरे परिवार का मेला।

वह हजारों की भीड़ में भी

रहता है जीवन भर अकेला।

-Sarla

“याद करेगा हिंदुस्तान

कोरोना का ये अभिमान

रखना है देश का ध्यान

याद करेगा हिंदुस्तान

घर में रहना हमारी शान

यही हमारा है बलिदान

याद करेगा हिंदुस्तान

बच्चों बुजुर्गों का रखना मान

पूरा रखना हमें इनका ध्यान

याद करेगा हिंदुस्तान

कितनों ने झोंकी जान

करना हमें उनका सम्मान

याद करेगा हिंदुस्तान

घर में रखो पूरा सामान

लक्ष्मण रेखा का रखो भान

याद करेगा हिंदुस्तान

बचानी है सबकी जान

कोरोना का तोड़ो अभिमान

याद करेगा हिंदुस्तान”

-Sheetal

“

न मेले के झूले
न बाज़ार की रौनक
न शादियों की शहनाई
न त्यौहारो की बधाई
सब की याद बहुत है आई

लोगो ने न छोड़ कुंभ मे जाना
न छोड़ गंगा मे नहाना
फिर कहते है
कैसे बढ़ा ये कोराना

न जाने कैसा ये दर्दनाक मंज़र हैं
कितने ही हुए बेरोज़गार
अपनो को मरता देख
कितने ही हुए बेबस और लाचार

बढ़ रही है कोरोना की लहरे
रूक नही रहा कोहराम
फिर भी सरकार के लिए
राजनीति है पहला काम

हर जगह तराही तराही है
फिर भी सरकार न बाज़ आई है

अब न दिखता है किसी का चेहरा
हर वक्त रहता है मास्क का पहरा
सब कुछ हो गया है पराया
कोरोना तेरा आना किसी को न भाया

फिर भी मन मे जगी है चाहत
कोरोना से मिलेगी एक न एक दिन
हम सब को राहत। “

-Shruti

“मुश्किलों को आसान बनाया,
पॉजिटिविटी का असली मतलब समझाया
दिन भले ही लंबे लगते थे
पर न जाने कैसे मां की लेट उठने की डांट से छोटे लगते थे!
बात मार्च 2020 की है
जब एक एग्जाम और मैं आज़ाद ,
कोरोना की आई ऐसी भ्यावेह दस्तक
जिसने बनाया हमे अपने घर में ही बंधक।
सुबह जल्दी उठना फिर भी मां से डांट खाना,
पापा संग छत पर पौधो के साथ समय बिताना,
भाई के कई भेद पता लगाना,
मम्मी को कह दूंगी यह कहकर कई चॉकलेट छीन कर खाना।
झाड़ू - पोंछा, कपड़े और बर्तन
मम्मी हाउसवाइफ नही वर्किंग वुमन है यह समझ आया।
थोड़ा शेड्यूल बिगड़ा थोड़े हम
लाड़ -प्यार में घर में सबसे छोटी से कुछ बड़ी हुई मैं।
थोड़ा संभले थे सूरज की एक नई किरण के साथ
पर कोरोना की इस महामारी ने अभी तो लगानी थी और वाट।
बहुतों के घरों के चिराग भुजाए
बहुतों के सिर से उठाया है साया

जन्मों - जन्मों के साथ के कई वादे भी तोड़े
उन बूढ़े मां- बाप का सहारा भी छीना।
संख्या ज्यादा, हावी ज्यादा, लेकिन मात्रा थी कम
शरीर कमज़ोर किया स्वाद सुंघद को किया खत्म
लेकिन!
सबसे बड़ी खुशी इस बात की थी
परिवार साथ था और उम्मीद साथ थी
उसी उम्मीद से आशा है यह
फिर कभी न लौटे वायरस यह
विजय है उम्मीद का नतीजा
और दो परिवारों की मेहनत का नतीजा
एक जिनसे है हमारे खून के रिश्ते
दूसरे वो जो बाहर कर रहे हमारी मदद बन कर फ़रिश्ते
उम्मीद का यह दीपक रोज़ मैं जलाती हूं
अपने परिवारों के साथ सब खुशी से रहे यही में चाहती हूं।
“

-Shruti goel

“The world is in jeopardy,
Everything seems to be dull recently.

Pandemic, Lockdown, Fungus,
Wars, colossal deaths
And same old politics;
Don’t know what’s next.

The bazaars have lost their charms.

The restaurants and cafes
Which were once full of
Laughter and zeal
Are void now.

The playground which once
Witnessed all cricket fights
Is growing wild now.

The birthdays and wedding
Invitations which once brought
Joy has become the
Cause of dilemma now.

The beautiful river which
Once spoke of culture
And heritage now tells
The misery of its people.

The elections where once
We choose the leaders
Has now chosen the
Deaths of its people.

Is it too hopeful
Now to ask when
Our lives will return
To its previous course?”

- Shruti

प्रकृति! इतनी खूबसूरत और आबाद थी।
चारों तरफ हरियाली और कल-कल बहती नदी की गूंज थी।
समुद्र में उठती लहरें और तालाबों में स्थिरता थी।
पहाड़ों सी ऊंची और झरनों सी नीची थी।
पशुओं का खेलना और पक्षियों की चाहचाहट थी।
पेड़-पौधे, वनस्पतियां और हरियाली से सजीव थी।
सन-सन हवा का चलना और मिट्टी की सुगंध थी।
आसमान से गर्व करना और जमीन से जुड़ी थी।
जैसे मां अपने बच्चों का पालन-पोषण करती है,
वैसे ही धरती मां ने संसार रूपी बच्चे का पालन पोषण किया।
जो था उसके पास जल, हवा, अन्न सब दे दिया।।
लेकिन इंसान है अपनी फितरत थोड़ी ही छोड़ेगा।
समय बदला और इंसान ने भी बदल लिया अपना स्वरूप,
खुद चला विकास की ओर और प्रकृति को ले गया पतन की ओर।।
जो कभी आबाद थी आज वह वीरान पड़ी है,
जो कभी हरियाली से भरपूर थी आज वह बंजर पड़ी है।।
सड़के बनाने के लिए वनों को काटा,
वाहनों के धुंए से हवा को दूषित किया,
कल-कारखानों के रसायनों से जल को जहरीला किया,
तूने ना जाने कब अपने भार से धरती को दबा दिया।।
कुदरत ने कई चेतावनी दी पर इंसान ना संभला।
अत्याचार करता रहा,
अस्वस्थ प्रकृति बेबस और लाचार होकर सब सहती रही।।
तभी उसकी मदद के लिए कोरोना एक फरिश्ता बनकर आया
उसने आकर ऐसा कहर बरसाया,
इंसान को कैद प्रकृति को आजाद कराया।।
जिसने प्रकृति को दुख पहुंचाया,
आज वह अपना चेहरा छुपाए हुए हैं।।
जिसने पशु पक्षियों का घर उजाड़ा,
आज उनके परिवार उजड़ रहे हैं।।
जहां बाजारों में सन्नाटा है,
वही श्मशान में लाशों का शोर है।।
जहां सरकार पैसा देकर नदियों को साफ नहीं कर पाई,
वहां कोरोना ने 21 दिन के लॉकडाउन में करके दिखा दिया।।
जहां इंसान कोरोना से तो लड़ी ही रहा था,
वही प्रकृति ने तूफान, भूकंप, समुंद्र के सैलाब से उसका सामना करा दिया।।
जिसने प्रकृति से उसकी हरियाली छीनी है,

आज उससे उसकी सांसे छीन रही है।।
जिसने हवा को दूषित किया,
आज वे उसी के लिए तरस रहे हैं।।
जिस प्रकृति को नष्ट करके विकास की दौड़ में शामिल हुए थे,
आज वे उसी प्रकृति की गोद में छिप रहे हैं।।
वो कहते हैं ना जैसी करनी वैसी भरनी,
यह सब तेरी ही करने का नतीजा है।।
हे इंसान! अभी भी समय है अपनी फितरत बदल ले,
प्रकृति को नष्ट नहीं उसकी रक्षा कर ले।।
मैं ये नहीं कहती विकास मत करो,
प्रकृति को साथ लेकर चलो।।
कभी भूलना मत इस विकास की देन प्रकृति ही है,
प्रकृति नष्ट हुई तो तेरा अस्तित्व ही मिट जाएगा।।

-Sonia

“

छोड़ गई जब सरकारें करने अपने परचारे
ऑक्सीजन की कमी जब खाली
और मिला साथ था ना दवाओं का
तब दिया साथ उन योद्धाओं ने

खांसी आती  ऐसा लगता ,
यमदूत घर पे आ थमका ,
छीक का नाम जब भूत हो गया
दिया था साथ तब उन योद्धाओं ने

हुई बात थी कल बस जिनसे ,
परसो हुई मुलाकात थी जिनसे,
चढ़ गए बाली सिस्टम की,
पर साथ छोड़ा न उन योद्धाओं ने

एम्बुलेंस की आवाज दिन रात चल रही,
शमशान में चिताओं की बाढ़ जल रही,
सहमा हुआ सा मन आज राम नाम से,
भगवान अल्लाह गॉड सारे चुप खड़े रह गए

बहुरुपिया कोरोना बड़े रूप धड़े हो गए,
साईं बाबा रह गए बस नाम के

अब बात करे उन योद्धाओं घर जिन्होंने छोड़ दिया

देखो उनके संघर्ष को लड़ना जिन्होंने सिखा दिया

देखो उनके हौसले बिना डरे जो खड़े रहे

देखो उनकी मेहनत को जिसने हमें बचा दिया

देखो उनकी मेहनत को जिसने हमें बचा दिया

देखो उनकी हिम्मत को महामारी से लड़के हमे बचा दिया

देखो उनकी महानता बिना लिए कुछ जीना सीखा दिया

भले पड़ी हो लाशे इतनी लड़ना उन्होंने सीखा दिया

जज्बातों से निकल कर कर्म करना सीखा दिया

भले मिला हो ना साथ किसी का अकेले चलना सीखा दिया

लड़ते कैसे है चुनौतियों से यह उन्होंने सीखा दिया

सलाम मेरा उन योधाओं को

हो चाहे वो डॉक्टर कही के या हो तैनात सिपाही

झुक के करते है नमन स भी को

इस महामारी से हम सब को बचा दिया

थप्पड़ खाए गालियां भी खाई यहा तक खाए जुते उन्होंने
हिम्मत और कर्तव्य की दी उन्होंने मिसाल है

हां उन योद्धाओं को मेरा सलाम है
हा उन योद्धाओं को मेरा सलाम है

-Soumya pandey

Since childhood we have get to hear " Health is wealth".
But only this time around we have got to notice it at length.
Coughing, sneezing in the bed.
From morning to night putting everyone at unrest.
At this hour if the maintenance and medium of care is well put.
We can be rest assured and it can be seen in our looks.
It's good to be well prepared for emergencies, than to hustle during mid nights.
A helping hand can say million words of being a " True friend " and can be a guiding light.
Doctors, nurses working late at the expense of their own health.
To do their best they fight till last but sometimes they do lose at the worst.
Some say it doesn't really matters of how many are surving this time.
As everyone is effected.... but if you ask the family of deceased you will know it better.
" If only the ambulance get on time I could have saved my mother " cried the son.
"If only we have got the proper medical facilities my daughter would have been alive" chided the father.
Don't make the life on line clouded by all the " If only s".
Make it a point to bring the change.
And it should first come from within.

-Sushmita

Wish we could go back to celebrate like good old days,
But now we are bounded in this non existing cage.

I remember how i enjoyed playing in the soil
The sky was ours and the ground had no fears

Festive seasons were excited and celebrated with the loved ones
But now we greet them 6 feet part with mask and gloves

The Diwali night doesn't have that spark,
All the good days have gone to a halt.

Those colourless Holi we made in our home,
Cuz first the colours were priority, but now wishing each other on phone.

Wish we could turn back time to good old days,
Instead of being stuck in this Corona phase.
-Tanishka

“क्या कहूं मैं मेरे इस परिवार के बारे में

सर पर है मेरे बचपन से जिनके दो हाथ,
यह माहामारी में उनको खोने के डर से
ढान लिया है मैंने कि कभी नहीं छोड़ूंगी इनका साथ ।

एक समय वो भी मैंने पाया
जब साथ में रह कर भी फोन से ही बात होती थी,
लेकिन मुझे अब समझ में आया
क्यूं मैं खुश रह कर भी रोती थी।“

-Vanshika azad

“क्या हमारा मीडिया, जो लोकतंत्र का एक बहुत ही बड़ा खंभा कहा जाता है उसी कोरोना काल मे उसने अपनी भूमिका किस रूप से निभाई है। क्या वो बिल्कुल निर्लिप्त, निष्पक्ष एवं निर्भय रहा है।

Title:- कितना खोफनाक मंजर

कितना खोफनाक मंजर है ये तबाही का,

फसी हुई दुनिया अपने ही हाथों मे

किसी के  कदमों की आहट जो देती थी सुकून

आहट हमको अब डराने लगी

चार दीवारी के भीतर हर शक्स जान बचा रहा है

महामारी का कहर कही उस पर ना बरसे

जो गालियां कभी गाती गुनगुनाती थी,

अब कोसों दूर तक कोई नजर ना आ रहा

खाली हमारे हाथ है, हथियार नहीं तो क्या

कुछ लोग इस हालत मे भी देते सबका साथ है

समाचार मीडिया ऐसे ही कुछ हाथ है।

चारों और दुनिया की जानकारी देना

यही उनका काम है

कितना खोफनाक मंजर है ये तबाही का

मीडिया है जो लोकतंत्र का स्तम्भ

तब महामारी मे भूल गई अपना ही कर्तव्य

जिनका काम है रोशनी फैलाना वहीं सबके घरों मे अंधेरा करके चले गए

ज्ञान की रोशनी दीपक से भी तेज

झूठे तख्तों से अंधेरा फैलाया सरकार के काम को हमेशा सही ठहराया

कितना खोफनाक मंजर है ये तबाही का

जिसका काम था सरकार की आलेचना

वो बिक गई सरकार के हाथों में

मौत के आँकड़े छुपाए, तथ्य छुपाए और

छुपाए सरकार के काम

आशा है एक दिन सुधर जाएंगे हालात

निष्पक्ष, निष्ठा से काम करेंगी सरकार

ये दिन भी गुजर जाएंगे

आनंदमय दिन फिर लौट आएंगे

-Vanshika pal

“कोरोना वायरस ने हमे बहुत कुछ सिखाया
क्षण भंगुर है जीवन यह बताया।
अकेले नहीं हैं हम धरती पर,
मानव का ज़ोर नहीं है प्रकृति पर
यह एहसास हमें कराया।

खो गए किसी के माँ-बाप
तो किसी ने अपने बच्चे खोए हैं।
हर तरफ बेबसी, लाचारी और दुख का साया है
न जाने वायरस ने यह कैसा कहर ढाया है।

सांसों को तरसते लोग बेबस हैं
फिर भी सत्ता में बैठे लोग खामोश हैं।
लालच बड़ा और जान है छोटी
काम कालाबाज़ारी के होने लगे हैं,
चंद रुपयों की खातिर अब
कुछ लोगों के ईमान भी बिकने लगे हैं।
न जाने यह कैसा बवाल है,
शवों से भरे मरघट हैं।
नदियों में बहती लाशें पूछती एक सवाल हैं
क्या हमें अपने अंतिम संस्कार का भी न हक है ?”
-vidhi

एक दिन की बात बताऊँ, सड़को से गयाब है इंसान |
ऐसे तो गाड़ी ही भरी रहती है, आज हुआ है सब गुमनाम |
लेकिन पहली बारी देखा सनाटा ऐसा,
लगा मुझे ये आख़िर रोग है कैसा ?
जो इंसान लुटता है हमारी ज़मीन,
आज खुद बैठा है घर में होकर शक्ति हिन |
जो करते रहते हैं हमे पिंजरे में कैद,
आज बैठे टीवी के सामने मुस्तैद |
चलो अच्छा ही हुआ,
कम से कम थोड़ी अपनी जिंदगी, अपने हिसाब से तो जी लू |

(३ माहिन बाद)

आज हो गया है तीन माह है लॉक डाउन को,
3 माह से पड़े हैं लेके अपने अबादियो को |
वो देखो मौसम कितना सुंदर है, मेरे पक्षी दोस्त आखिर साफ हवा में उड़ रहे हैं |
मेरे बाकी दोस्त सड़को पे अपने मन मर्जी से चल रहे हैं, भौक रहे हैं |
आखिर जैसी करनी वैसी भरनी देखने को मिल ही गई
जो इंसान दुसरो को कैद करता है, आज खुद को कैद करके बैठा है।
रात को दिल्ली में तारे देखे, पहली बार आसमान काला या नीला दिख|
ऐसे तो हमेशा धूसर सा दिखता है |
आज कल जंगल में सही में मंगल हो रहा है |
क्यूकी इंसान का इंसानी हाथियारों से ही दंगल हो रहा है |
बुरा तो लगता है जब कुछ इंसान अनाथ होते हैं या कुछ बांझ,
पर फिर याद आता है इनका किया धरा हमारे साथ |
हमें नष्ट करना हमारे घर को बुरा करना, हमें बंधना, हमें मारना
किसी को जिंदा जलाना, तो किसी को बम से उड़ाना
लेकिन तब भी बुरा लगता है क्युकी हम जांवर है इंसान नहीं |
-Vishakha

“ना भूलेंगे कभी उन सफ़ेद कोट वालोंं को
जो बनकर आए मसीहा , लड़ने इस बीमारी को
याद रखेंगे उन खाकी वर्दी वालोंं को , जो आए सड़क पर् हमें बचाने को
सलामत थे जब हम्म घर के भीतर , जुन्ज्झ् रहे थे वह बाहर होकर निडर
बनकर खड़े थे ढाल हमारी , ताकि छू ना सके हमें यह महामारि
करता सारा देश आज उन्हें सलाम है 2
उनकी हिम्मत और क़ुरबानी पे हमें नाज़् है
शर्म आती है उन ग्वारो पर् , शर्म आती है उन जाहिल ग्वारो पर्
जिन्होंने इनपर पत्थर बर्साए थे
शुक्रिया करो , शुक्रिया करो इन ज्वानो का जो खुद की जान पर खेल के तुम्हें बचाने आए थे
Chor कर् अपना घर परिवार , बचाने को हमारा संसार -2
अनगिनत है इनके उपकार , जो बनकर आए थे उजाला मिटाने को यह अंधकार
कच् रा उठाने से मरीजों को बचाने तक्
ज़रूरत् की चीज़ए घर पर पंहुचा ने तक
सलाम करती हु सलाम करती हु उस हर योद्धा को
जो खड़े हुए इस देश के लिए आखिरी दम तक

च्चाहे बजा लो कितनि भी तालिया -2
ना कभी इनका रिन्न् चुका पाओगे
च्चाहे यह वक़्त बीत जाए
इनके साहस के गीत फिर भी gaenge
कई मुश्किल वक़्त काट लिए है
कोरोंना भी गुज़र जाएगा
सह कार दो सरकार को
कोरोना भी थम जाएगा  शुक्रिया करो “

-Yashika bisht

Life was always fast-paced, we never slowed down,
Until everything stopped
when Corona came to town.
The roads are empty,
the crowds too small,
And no trace of life outside,
none at all.
Why does our wide world look so desolate now
Cause, there's a monster out there,
That can make even breathing like hell.
It is tinier than our cells,
but it is causing a huge pandemic,
If it enters your body,
it may wreak havoc.
Coughs or sneezes are like its private jet,
And to your lungs, it's a threat.
Some lay in hospital beds
While Some in coffins dead
If you have to go out,
think twice,
Wear your mask,
be wise.
After coming home,
sanitise
Nobody's going to school anymore,
No child playing in the park,
Nobody's even opening the door,
Except for grocery or stock
We used to giggle and play
On our swings and slide,
Now, we're caged in our homes,
As Corona gambols outside.
We, who are social animals,
Now dread the door bell.
When can we really be free?
When can we stick out?
Come on,
let us await that day

-Yashika

Life was always fast-paced, we never slowed down,
Until everything stopped
when Corona came to town.
The roads are empty,
the crowds too small,
And no trace of life outside,
none at all.
Why does our wide world look so desolate now
Cause, there's a monster out there,
That can make even breathing like hell.
It is tinier than our cells,
but it is causing a huge pandemic,
If it enters your body,
it may wreak havoc.
Coughs or sneezes are like its private jet,
And to your lungs, it's a threat.
Some lay in hospital beds
While Some in coffins dead
If you have to go out,
think twice,
Wear your mask,
be wise.
After coming home,
sanitise
Nobody's going to school anymore,
No child playing in the park,
Nobody's even opening the door,
Except for grocery or stock
We used to giggle and play
On our swings and slide,
Now, we're caged in our homes,
As Corona gambols outside.
We, who are social animals,
Now dread the door bell.
When can we really be free?
When can we stick out?
Come on,
let us await that day

- Yogita

# THE END.